6346

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अकटूबर सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वे इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती हैं जिस को व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करले ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	६ भीष्म पर्व्व	बालकाण्ड	अनेकार्थ
महाभारत	७ द्रोण पर्व्व	अयोध्याकाण्ड	छन्दोर्णव पिंगल
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	८ कर्णपर्व्व	३ आरण्य काण्ड	कविकुल कल्पतरु
सभापर्व्व, वनपर्व्व,	९ शल्य पर्व्व गदा	४ किष्किन्धाकांड	रसराज
२ हिस्सा में विराटपर्व्व	सौप्तिक पर्व्व, ऐषी	५ सुन्दरकाण्ड	सतसई सटीक बिहारी
उद्योग पर्व्व भीष्मपर्व्व	षिक व विशोक पर्व्व	६ लंकाकाण्ड	सतसई
द्रोणपर्व्व	स्त्री पर्व्व	७ उत्तरकाण्ड	सभाविलास
३ हिस्सा में कर्णपर्व्व	१० शान्ति पर्व्व राज	रामायण शब्दार्थकोश	तुलसी शब्दार्थप्र-
शल्यपर्व्व, गदा पर्व्व,	धर्म्म व आपद्धर्म्म	रामायण का इतिहास	भजनावली
सौप्तिकपर्व्व, ऐषिक	व मोक्षधर्म्म व दान	रामायण मानस दीपि-	प्रेमरत्न
पर्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्री	धर्म्म	रामायण गीतावली	युगल विलास
पर्व्व, शान्ति पर्व्व राजध-	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण गीतावली स-	चित्र चन्द्रिका
र्म्म, मोक्ष धर्म्म	म वासिक मुशलप	विनयपत्रिका बाबू मै-	बारहमासा बलदेव
४ हिस्सा में शान्ति पर्व्व,	र्व्व महा प्रस्थान स्व	विनयपत्रिका बाबू शि-	मनोहर लहरी
दान धर्म्म, अश्वमेध,	र्गारोहण	वेदान्त	गंगा लहरी
आश्रम वासिक पर्व्व,	१२ हरिवंश पर्व्व	योग वाशिष्ठ	अजब विनोद
मुशल पर्व्व, महाप्र-	रामायण रामविलास	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	राग
स्थान, स्वर्गारोहण	रामायण तुलसीकृ-	काव्य	रागप्रकाश
पर्व्व हरिवंश पर्व्व	रामायण मय मानस	सूरसागर	लावनी
महाभारत पर्व्व अलै-	दीपिका कोश आदि	कृष्णसागर	शृंगार बत्तीसी
हदा भी है	तथा मय तसवीर	विश्रामसागर	क़िस्सह वग़ैरह
१ आदि पर्व्व	तथा जिल्द बन्धी	प्रेमसागर	नानार्थ नाम संग्रहावली
२ सभापर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	व्रजविलास	वज्रसार
३ वन पर्व्व	मय तसवीर	व्रजविलास छोटा	शिवसिंह सरोज
४ विराटपर्व्व	तथा मय क्षेपक	कृष्णप्रिया	भक्तमाल
५ उद्योग पर्व्व	रामायण सातों कांड	विजय मुक्तावली	रामाभिषेक नाटक

श्रीगणेशाय नमः

अथ भारतीभूषण

लिख्यते

दोहा

॥ श्रीवल्लभ आचार्य्य के भजत भजत सब पाप ॥ श्रीवल्ल-
भ करुणा करत हरत सकल संताप १ विधि भव तरनी हम-
सन ही जस गरू करु नाहिं ॥ विधि भव तरनी नमत नित हरि
पद मम उर माहिं २ मोहन मन मानी सदा बानी को करि
ध्यान ॥ अलंकार बरनन करत गिरिधरदास सुजान ३
सुंदर बरनन गन रचित भारति भूषन एहु ॥ पढ़हु गुनहु
सीखहु सुनहु सत कवि सहित सनेहु ४ अथोपमा ल-
क्षण ॥ सो उपमा जहँ बरनिये उपमेय रु उपमान ॥ समता-
ई शोभित सदा इमि कवि कहहिं सुजान ५ उदाहरण य-
था ॥ आनन पंचानन तिलक पंचानन करि सोह ॥ खरी
रमासी राधिका भरी मोद संदोह ६ उपमानादि के ल-
क्षण ॥ जाकी समता दीजिए तिहि कहिए उपमान ७
जाको सम करि बरनिए सो उपमेय न आन उपमेय अ-
रु उपमान गत जो कछु धरम लखाय ॥ सो सा[illegible] के जग सु
इमि बरनहिं कबिराय ८ समता बाधक [illegible] न तिसी बिन-
क नाम ॥ बरने गिरिधर दास इमि ल[illegible]तिसी भगति सौं

कंबु कमल अरु बिंब फल सुक सुवरन की सीप ॥ इनहिं आदि उपमान हैं समुझहु कबि कुल दीप ॥२०॥ कंठ भौं सिर पलकावली अधर नासिका श्रौन ॥ इनहिं आदि उपमेय हैं वर नहिं वर बुधि भौन ॥२१॥ सुंदरता सुकुमारता स्यामलता सुललाम ॥ ए साधारन धर्म हैं मनहरता रस धाम ॥२२॥ लौं सो से सी सीं सरिस सम समान इव तूल ॥ ऐसे सौ से ऐसे ए सकल उपमा वाचक मूल ॥२३॥ जिमि तिमि जैसोइ तैसोई यथा तथा ज्यौं त्यौंहिं ॥ एऊ उपमा वाचक हि दोय मिले ते होहिं ॥२४॥ अथ पूर्णोपमालं० ॥ उपमान रु उपमेय जहँ उपमा वाचक होइ ॥ सह साधारन धर्म के पूरन उपमा सोइ ॥२५॥ उदाहरन ॥ सुख सुख कानिसिका सरिस सफरी से चल नैन ॥ छीन लंक हरि लंक सी दाढी ऐ नारे न ॥२६॥ अथ लुप्तोपमा ॥ उपमानादिक जो कहे तिन चारिहूं मकारि ॥ इक बिन है बिन तीन बिन लुप्तोपमा बिचारि ॥२७॥ वाचक लुप्ता प्रथम बिन उपमा वाचक होइ ॥ द्वितिय धर्म लुप्ता कहिय धर्म रहित है सोइ ॥२८॥ तीजी है वाचक धरम लुप्ता सुकवि सुजान ॥ बिन वाचक उपमेय के लुप्ता चौथी जान ॥२९॥ पंचईं है उपमान बिन बिन वाचक उपमान ॥ छठीं धरम उपमान बिन सत[illegible]मान ॥३०॥ उपमान रु वाचक धरम लुप्ता अठईं जा[illegible]भांति लुप्तोपमा कविजन कहहिं बखान ॥३१ [illegible]दाहरण ॥ सुख पूरन ससि सोहनो अमल [illegible]कनक बेलि कल कामिनी माखन ।

कथा भी
१ आदि पर्व
२ सभा पर्व
३ बन पर्व
४ विराट पर्व
५ उद्योग पर्व

म
नथा
सामाचार

मधुरे बैन ॥२२॥ धर्मलुप्तोदाहरण ॥ बिज्जुलतासी नागरी सजल जलद से श्याम ॥ खरे कुंज मैं छबि भरे दोऊ अति अभिराम ॥२३॥ वाचक धर्म लुप्तोदाहरण ॥ बैन सुधा दृग मैन सर सैन सैन के ऐन ॥ बदन रैन पति लखहु हरि रैन चैन वर दैन ॥२४॥ वाचकोपमेयलुप्तोदाहरण ॥ अटा उदय होतो भयो छबि धर पूरन चंद ॥ हां बलि चलि अवलोकिये मनमथ कारन अनंद ॥२५॥ उपमान लुप्तोदाहरण ॥ सुंदर कंठ कपोत सो केहरि सी कटि खीन ॥ जे हरि भ्रम कावे खरी है हरि कुंज गलीन ॥२६॥ वाचकोपमान लुप्तोपमा ॥ भवन दीप कामिनि दिपति सरप सांस गुरु लेति ॥ कौन हेतु हरि मौन वह बूझेहु उत्तरु देति ॥२७॥ धर्मोपमान लुप्तोदाहरण ॥ घन समरन गरजत फिरैं कौं काल सी मारि ॥ सागर सी गंभीरता समर धीर त्रिपुरारि ॥२८॥ उपमान वाचक धर्म लुप्तोदाहरण ॥ मृग नैनी गज गामिनी पिक बैनी सुकुमारि ॥ केहरि कटि वारी खरी नारी लखो मुरारि ॥२९॥ अथ मालोपमा ॥ जहं एकहि उपमेय के वरने बहु उपमान ॥ ताहि कहहिं मालोपमा कवि सुजान मतिमान ॥ ३० ॥ उदाहरण ॥ मृगसे मनमथ बान से पीन मीन से स्वच्छ ॥ कंजन से खंजनन से मन रंजन तो अच्छ ॥३१॥ अथ रसनोपमा लक्षण ॥ कथित प्रथम उपमेय जहँ होत जात उपमान ॥ ताहि कहहिं रसनोपमा जे जग सुकवि प्रधान ॥३२॥ उदाहरन ॥ मति सी नति नति सी बिनति बिनती सी रति चारु ॥ रति सी गति गति सी भगति तो मैं

पवन कुमार ॥३३॥ अनन्वय लक्षण ॥ एकहि में उपमेयता उपमानता जु होइ । दूजे सों समता नहीं यहै अनन्वै सोइ ॥३४॥ उदाहरण ॥ तुव कीरती सी स्वच्छ न तुव कीरति है श्याम । सुर सरिता सी सुरसरी शोभा भरी सुदाम ॥३५॥ उपमेयोपमा लक्षण ॥ है हैं ही जहं परसपर उपमेय रु उपमान ॥ सो है उपमेयोपमा तीजे सो समतान ॥३६॥ उदाहरण ॥ अमल कमल से नैन हैं कमल नैन से स्वच्छ ॥ रुचिर काम से श्याम हैं हरि सम काम प्रतच्छ ॥३७॥ प्रथम प्रतीप लक्षण ॥ उपमेयहि उपमान ज ब कीजे गिरिधरदास ॥ ताकों पांच प्रतीप में प्रथम जानिये खास ॥३८॥ उदाहरण ॥ तो ऐसी तिय काम की तो मुख सो राकेस ॥ नव पल्लव तव अधर से कम्बु कंठ सम वेस ॥३९॥ द्वितीय प्रतीप लक्षण ॥ जहं प्रतीप उपमान को गर्व हरै उपमेय ॥ दूजो कहहिं प्रतीप तेहि जिनकी बुद्धि अमेय ॥४०॥ उदाहरण ॥ कहा करति निज रूप को गरब गहे अविवेक ॥ रमा उमा सचि सारदा तोसी तीय अनेक ॥४१॥ तृतीय प्रल० ॥ अन आदर उपमेय सों जब पावै उपमान ॥ तीजो कहहिं प्रतीप तेहि कवि अवनीप सुजान ॥४२॥ उदाहरण ॥ नीच पने को क्यों करत तूं उर बीच गुमान ॥ अंबुज तोसे अधिक जग ह्वै री देखी पहिचान ॥४३॥ चतुर्थ प्रल० ॥ समता लायक होय नहिं जब जाहिर उपमान ॥ गिरिधरदास प्रतीप सो है चतुर्थ मतिमान ॥४४॥ उदाहरण तो मुख ऐसो पंक सुत अरु ससंक मह वाल ॥ बर नहिं

हृया असंक कबि बुद्धि इंद्र विख्यात ॥४५॥ पंचमप्रतीप लक्षण॥ व्यर्थ होइ उपमान जब बर उपमेय समीप॥ गिरिधरदास बखानिये पंचम ताहि प्रतीप ॥४६॥ उदाहरण॥ देखि रूपवत कामिनी कहा उरबशी नारि॥ कहामैन कामैन तिय कमला शैल कुमारि ॥४७॥ द्विविध रूपक लक्षण॥ बिषई बिषयहि बरनिये करि अभेद तद्रूप॥ अधिक न्यून सम करि सोइ षट विधि रूपक रूप।४८॥ अधिकोक्ति अभेद रूपक उ०॥ घन गज चढ़ि आकाश मग चले इंद्र अरि जोइ॥ सुधा स्रवत शशि छत्र सिर मोत्तिन जगमग होइ ॥४९॥ न्यूनोक्ति रूपक उदा०॥ कुसुम धनुष बिनु कुसुम धनु देखो कुंज गलीन॥ चली जात जग अमल यह कमला कमल बिहीन ॥५०॥ समोक्ति अभेद रूपक उदा०

तुअ आनन ससि दुख हरन सुधा धरन छबि खानि॥ रजनी रंजन रसिक प्रिय तम हर आनंद दानि॥५१॥ अधिकोक्ति तद्रूप रूपक उ०॥ जस धुज वा धुज तें अधिक तीन लोक फहरात॥ धर्म मित्र वह मित्र सों मरत जियत संग जात ॥५२॥ न्यूनोक्ति तद्रूप रूपक उदा०॥ अपर धनेश जनेश यह नाहिं पुष्पक आसीन॥ द्वितिय गणेश सुबेश शुचि सोहत सुंड बिहीन ॥५३॥ समोक्ति तद्रूप रूपक उ०॥ यह पालत संसार कों घालत पर को पच्छ॥ अपर मनोहर रूप धर अंबुज अच्छ प्रतच्छ ॥५४॥ परिणाम ल०॥ बरननीय उपमान ह्वै जबै करै कछु काम॥ गिरिधरदास बखानि ए तासु नाम परिनाम ॥५५॥ उदाहरण०॥ पद

पंकज तें चलत बर कर पंकज लै कुंज॥ मुख पंकज तें क-
हत हरि बचन रचन सुद मंजु॥ श्लेषलक्षण॰॥ एकहि
बहु बहु विधि लसैं कहि बरनि बहु रीति॥ श्लेषालंकृत
उभय कवि बरनहिं करि प्रीति॥५७॥ प्रथमश्लेष उ॰॥
नियन काम अत्सवन हित नंद सुवन नव अंग॥ लखौ
कंस अन सुनिन हरि मोहन सविसे रंग॥५८॥ द्वितीय उ-
श्लेषउदा॰॥ तेज तरनि मुद दानि शशि शत्रुन काल सुना-
म॥ ब्रजनारिन कौं काम से अहो सदा घन श्याम॥५९॥
सुमिरन भ्रम संदेह ल॰॥ सुमिरन भ्रम संदेह ए अलंका-
र हैं तीन॥ लक्षण लक्षित नाम मैं बरनहिं सुकवि प्र-
वीन॥६०॥ सुमिरन उ॰॥ सुनि कोकिल धुनि बचन की
आवति है सुधि मोहि॥ लखि शशि मुख की होति सुधि
तन सुधि घन कों जोहि॥६१॥ भ्रम उदाहरण॥ जानि श्या-
म घन घन तुम्हैं नाचि उठै बन मोर॥ हेम सलाका मानि
तोहि चोर फिरैं सकुचोर॥६२॥ संदेह उदाहरण॥ रमा कि
राधा कै गिरा गिरिजा कै रति जानि॥ श्याम काम धौं क-
लपतरु नारायण मुद दानि॥६३॥ शुद्धापन्हुति लक्षण॥
धर्म दुरावै और ही करि आरोप सुजान॥ शुद्धापन्हुति क-
हहि तेहि अलंकार मति मान॥६४॥ उदा॰॥ पहिरे श्या-
मन पीत पट घन मैं बिज्जु बिलास॥ सिर सारी नहिं ता-
स की इंदु कला परकास॥६५॥ हेत्वपन्हुति ल॰॥ सोइ
शुद्धापन्हुति विषे जक्ति जुक्ति जुनय च॥ गिरि धर दास (६)
बखानि ए हेतु अपन्हुति तव॥६६॥ उदा॰॥ तिपननिसा

घन वन चलै हेम वेलि नहिं जाय॥ छुटकि जलद तें जलद बहु दामिनि जात लखाय॥६७॥ पर्यस्तापन्हुति ल०॥ और विषै गुन और को जब कीजे आरोप॥ तब पर्यस्तापन्हुती इमि कवि कहहिं सचोप॥६८॥ उदा०॥ नहीं सक सुरपति अहै सुरपति नंद कुमार॥ रतना कर सागर नहीं मथुरा नगर वजार॥६९॥ हेतु पर्यस्तापन्हुति लक्षण॥ पर्यस्तापन्हुति विषै हेतु सहित जो कोइ॥ धर्म छपावै हेतु युत वही नाम तब होइ॥७०॥ उदाहरण॥ तम हर रवि नहिं हरि भजन तमी होइ रवि लोक॥ कहुं तम रहै न हरि भजे इमि वरनहिं मति ओक॥७१॥ भ्रांतापन्हुति ल०॥ भ्रांति और की और जब करै वचन सों नास॥ भ्रांतापन्हुति कहहिं तेहि कवि जन गिरिधर दास॥७२॥ उदाहरण॥ जीवन दीनो श्याम घन सजनी रजनी आइ॥ कों सखि विन वरसात के नहिं नहिं गोकुल राइ॥७३॥ छेकापन्हुति ल०॥ संका नासै और की सांची वात दुराइ॥ छेकापन्हुति कहत हैं ताहि कविन के राइ॥७४॥ उदा०॥ ऐंचि चीर तन सखि किय हो सिंगार समच्छ॥ कुंजन में कों स्याम सखि नहिं करील को वृच्छ॥७५॥ कैतवापन्हुति ल०॥ औरहि वरनै और है मिसि करि वर मति मान॥ ताहि कैतवापन्हुती भूषन कहहिं सुजान॥७६॥ उ०॥ कुचमिस करी मन मथ मथन त्रिय उर करत निवास॥ पावस मिस कर वज्र लै इंद्र देत ब्रज त्रास॥७७॥ उत्प्रेक्षा लक्षण॥ उत्प्रेक्षा विधि तीन हैं इहि विधि कहहिं प्रवीन॥

वस्तु हेतु फल रूप करि जिनकी मतिरस पीन ॥७८॥ वस्तु हेतु फल भेद वर्णन ॥ वस्तु द्विविध उक्ता सपद अनुक्ता सपद जानि ॥ हेतु सुफल सिद्धा सपद असिद्धा सपद मानि ७९ उक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण ॥ हालाहल निकस्यो महा भरत ज्वाल की जाल ॥ सिंधु मथत मानो कढ़ी बड़वानल की ज्वाल ॥८०॥ अनुक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण ॥ वरषत मानो चंद्रमा किरिन वज्र कन बान ॥ सावन में धावन लगे घनु यम गन अस मान ॥८१॥ हेतु सिद्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तुम करतलसत मनु गहीहिं डोरा डोर ॥ लोपर छाया परत मनु श्यामल नंद किशोर ॥८२॥ हेतु असिद्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तोई छन समता चहत मानहु तीक्षन बान ॥ छूरि महीप कमान सों लेहिं मृगन को मान ॥८३॥ फल सिद्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ मोहि लखि चपला सकुचि पुनि घनमें जाति समाइ ॥ यों गुनि तिय मनु मूंदि मुख मंदिर बैठी आइ ॥८४॥ फल असिद्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तो कटि समता हेतु मनु सिंह करत बनवास ॥ कुच समता हित सहत मनु गिरि हिम घाम बतास ॥८५॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक ॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक मनहुं मनु जनु आदिक आहिं ॥ जहां नहीं ए जानिए गम्योत्प्रेक्षा ताहिं ॥८६॥ गम्योत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तोरि तीर तरु के । सुमन वर सुगंध के भौन । जमुना को पूजन करत वृन्दावन को पौन ॥८७॥ रूपकातिशयोक्ति लक्षण ॥ जहं व्यंजक उपमेय को कहि केवल उपमान ॥ रूपकातिशयोक्ति

9 بہاری بھوشن

त्तिहि वरनहिं वुद्धि निधान ॥८८॥ उदाहरण ॥ ससि में विद्रुम ता विषें कुंदावलि दरसाइ ॥ तापें सुक सुक पें धनुष विवि सर सहित लखाइ ॥८९॥ सापन्हव रूपकातिशयोक्ति लक्षण ॥ पर्य्यस्तापन्हुति सहित यही अलंकृत पद ॥ सापन्हव रूपक सहित अतिशयोक्ति है तद ॥९०॥ उदाहरण ॥ तुम्ह मुख मैं निवसत सुधा हे राधे सुकुमारि ॥ ताहि बखानें चंदमा विन बूझें भ्रम धारि ॥९१॥ भेदकातिसयोक्ति लक्षण ॥ औरै पद भेदक जहां अतिशयोक्ति में होइ ॥ भेदकातिसय उक्ति वर अलंकार है सोइ ॥९२॥ उदाहरण ॥ अवलोकनि बोलनि हंसनि डोलनि औरै और ॥ आवनि मृदु गावनि सवै औरै याके तौर ॥९३॥ संवधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जहां देत संवध सों सुकवि अयोग हि योग ॥ संवधातिशयोक्ति तिहि वरनत पंडित लोग ॥९४॥ उदाहरण ॥ चलत अवध पुर पियत जल नभसरिको भरि सुंड ॥ कलस लेत ध्रुव धाम के तुम्हरे गमभसुंड ॥९५॥ असंवधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जोगहि करीय अजोग जव मति अनुसार प्रकास ॥ असंवध अतिशय उक्ति कहिये गिरिधरदास ॥९६॥ उदाहरण ॥ रवि पावे सनमान क्यों तेज देखि तुम्ह भूप ॥ पवि सरतें कवि बुद्धि तें सदा निरादर रूप ॥९७॥ अक्रमातिशयोक्ति लक्षण ॥ कारण औ कारज जवै दुहूं वरनिये संग ॥ अक्रमातिशय उक्ति सों भूषन कविता अंग ॥९८॥ उदाहरण ॥ उठौ संग गज कर कमल चक्र चक्रधर हाथ ॥ करतें चक्र सुन क

सिर धारतें विलग्यो साथ ॥ १९९ ॥ चपलातिशयोक्ति लक्षण ॥ कारन के नाम हि सुने कारज आसु हि होइ ॥ चपला अतिशय उक्ति यह अलंकार है सोइ ॥ २०० ॥ उदाह० ॥ जान कहौ परदेश पिय सुनि सूखी यों बाल ॥ मुंदरी कर पहुंची भई पहुंची उर की माल ॥ २०१ ॥ अत्यंतातिशयोक्ति ल० ॥ पूर्वापर क्रम ना मिले जाको गिरिधरदास ॥ अत्यंतातिशयोक्ति तोहि कवि जन करहिं प्रकास ॥ २०२ ॥ उदा० ॥ हनूमान की पूंछ में लगन न पाई आगि लंका सिगरी जरि गई गए निशाचर भागि ॥ २०३ ॥ तुल्ययोगिता ल० ॥ क्रिया और गुन करि जहां धर्म एकता होइ ॥ आर्यन को कै इतर को तुल्ययोगिता सोइ ॥ २०४ ॥ प्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥ असन उदय अवलोकि कै सकुचहिं कुवलै चोर ॥ इंदु उदय लखि स्वैरिनी वदन वनज चहुं ओर ॥ २०५ ॥ अप्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥ लखि तेरी सुकुमारता ए री या जग माहिं ॥ कमल गुलाब कठोर से काकों भासत नाहिं ॥ २०६ ॥ द्वितीय तुल्ययोगिता लच्छन ॥ तुल्य वृत्ति हित अहित में जब बरनिय निरधारि ॥ तुल्य योगिता अपर यह बरनहिं सुकवि विचारि ॥ २०७ ॥ उदाहरण ॥ गिरिधरदास जहांन में तुम नृप अति चतुर सुजान ॥ सर कीड़ा करि हरत हौ तिय को अरि को मान ॥ २०८ ॥ तृतीय तुल्ययोगिता लक्षण ॥ सम करि उत्कृष्ट गुन बहु को एकहि ल्याइ ॥ तुल्य योगिता तीसरी ताहि कहैं कवि राइ ॥ २०९ ॥ उदाहरण ॥ जम विधि बुध विधु विबुधपति विधुधर बुद्धि निधान ॥ सुम

भूप हौ कल्प तरु गुन निधि चतुर सुजान ॥२२०॥ दीपक ल० ॥ जहँ अवर्ण्य अरु वर्ण्य को धर्म एक गुनि लेहु। अलंकार दीपक हौ नाम तासु कहि देहु ॥२२१॥ उदा० ॥ सोहत भूपति दान सौं फल फूलन आराम। ऊंचे तन सों द्विरद वर गति सों अश्व सुदाम ॥२२२॥ आवृत्त दीपक ल० ॥ आवृत्त दीपक तीन विधि पद आवृत्त इक जानि। अर्था वृत्ति पद अर्थ की आवृत्ति इमि पहिचानि ॥२२३॥ पद आवृत्ति दीपक उदा० ॥ नंदसुवन ब्यारू करत बाढ़ी प्रीति अथोर। परसत्ति सुंदरी सरस तिय परसत दृग दृग कोर ॥२२४॥ अर्था वृत्ति दीपक उदा० ॥ दौरहिं संगर मत्त गज धावहिं हय समुदाइ। नटहिं रंग महिं बहु नटी नाचहिं नट हरषाइ २२५ ॥ पदार्था वृत्ति दीपक उदा० ॥ गरजत हैं रन राम जू गरजत हैं दससीस। धावत रिसि भरि रजनि चर दहुं दिशि धावत कीस ॥ २२६॥ प्रति वस्तूपमा लक्षण ॥ होहिं वस्तु प्रति सम जबै उपमेय अरु उपमान। जुदे जुदे पद करि कहौ प्रति वस्तूपम जान ॥२२७॥ उदाहरन ॥ साधु संग पायहु नहीं खल को खलपन जाय। सुधा पिआ एहु अहि नहीं तजै गरल दुखदाय ॥२२८॥ दृष्टान्त ल० ॥ वर्ण्य अवर्ण्य दुहून को भिन्न धर्म दरसाइ। जहां बिंब प्रति बिंब सों सो दृष्टान्त कहाइ ॥२२९॥ उदाहरण ॥ रूपवती तुमहीं अहो रती प्रभावती जानि। नृप तुमहीं ज्ञानी अहो दानी सुर तरु मानि ॥२३०॥ निदर्शना लक्षण ॥ तीन प्रकार निदर्शना कवि वरनहिं स विवेक। सदृश दोऊ वाक्यार्थ को एकारोपन।

न एक ॥२२१॥ उदाहरन ॥ जो दाता को सरल चित नहीं कुटिलता भास ॥ पूरन बिधु अकलंकता जानिय गिरिधरदास ॥२२२॥ द्वितिय निदर्शना ल० ॥ उपमानो उपमेय को धर्म धरै जब ल्याइ ॥ पलटे हू मुनि दर्शना द्वितिय कहहिं कबिराइ ॥२२३॥ उदाहरण ॥ लई चपलई मीन की तो दृग नारि निहारु ॥ नृप तो पानि उदारता लीनी सुरतरु चारु ॥२२४॥ तृतीय निदर्शना ल० ॥ जहं सदर्थ असदर्थ को बोध क्रिया करि होइ ॥ तीजी तहां निदर्शना बरनहिं कबि सब कोइ ॥२२५॥ सदर्थ उदाहरण ॥ गुरु पादोदक सिर धरिय सदा जतावत एहु ॥ सिर धारत हैं गंग को महादेव करि नेहु ॥२२६॥ असदर्थ उदाहरन ॥ निडर पनो करि बदन को नास जनावत जाति ॥ करत मसाल मुकाबिले बाती तुरत बुझाति ॥२२७॥ व्यतिरेक ल० ॥ बरनिय बर्ण्य अबर्ण्य में जहं बिशेष कबिराइ ॥ अधिक न्यून सम भेद करि सो व्यतिरेक कहाइ ॥२२८॥ अधिक उदाहरन० ॥ भूप कल्पतरु से अहो बैभव बुद्धि बिशेषि ॥ तिय पल्लव से तो अधर अधिक अमृत रस पेखि ॥२२९॥ न्यून उदाहरन० हरि से हरि जन जानु पै हरि घर घर बिश्राम ॥ कुटिल सर्प से पै सरप डसत ताहि करत तमाम ॥२३०॥ सम उदाहरन० जो निज बैर मैं परत चूर करत दलि ताहि ॥ पथ्य संग पै गहत नहि खल खल बृंद सदाहि ॥२३१॥ सहोक्ति ल० ॥ जहं मन रंजन बरनिये एक संग बहु बात ॥ सो सहोक्ति आभरन है ग्रंथन में बिख्यात ॥२३२॥ उदाहरन० ॥ आई

चतुराई सिगरी लई तो अंग॥ मन मोहन सों मन मिल्यो हू नैनन के संग॥२५३॥ विनोक्ति लक्षण॥ है विध कहहिं विनोक्ति यों सु कवि बुद्धि के ऐन॥ प्रस्तुत कछु बिन न्यून इक कछु बिन सोभा दैन॥२५४॥ प्रथम विनोक्ति उदाहरण॥ कवि बिन नहिं सोहै सभा निसि बिन सुधानिवास॥ कृष्णन गिरिधरदास बिन गिरिधर गिरिधरदास॥२५५॥ द्वितीय विनोक्ति उ०॥ धन्य धन्य तो को धनी बिना गर्व सरसाय॥ राम राजत बहुप शवरस कर सुनि दरसाय॥२५६॥ समासोक्ति लक्षण॥ प्रस्तुत मैं जहँ फुरै अप्रस्तुत को ज्ञान॥ समासोक्ति भूषन कहैं तो कों कविकुल भान॥२५७॥ उदा०॥ सजनी रजनी पाइ शशि विहरत रस भरपूर॥ प्यासि गत मादी सुदित कर[illegible] के भूर॥२५८॥ परिकर लक्षण॥ जहाँ विशेष न दीजिये सहित आसय अभिराम॥ गिरिधरदास बखानिये भूषन कहि परिकर नाम॥२५९॥ उदा०॥ चक्रपानि हरि कों मिलिव आतुर जान भक्ति दूर॥ रक्ष वस्मत घन श्याम तुम ताप हरन मुद पूर॥२६०॥ परिकरांकुर लक्षण॥ जहाँ विशेष्यहि धरिये साभिप्राय के संग॥ परिकरांकुर तौन है भूषन कवित्त प्रसंग॥२६१॥ उदाहरण॥ मो रस नाते आज बहु पियतें कहँ कुबोल॥ पावन हीं पुजवावतो सूर प्रताप अतोल॥२६२॥ श्लेष लक्षण॥ बहुत अर्थ जुत श्लेष है भूषन कहहिं प्रवीन॥ वर्ण्य अवर्ण्य दुहूनके आश्रित भेद सु तीन॥२६३॥ प्रकृतानेक

۱۴ - بھارتی بھوشن

विषम श्लेषोदाहरण०॥ अहि सवार [illegible] ज्ञान जित नरकद लन जित ताक॥ विजय मित्र बल बंधु युत मधु हत सुबरी वाक॥२४४॥ अथ कृतानेक विषय श्लेषोदाहरण०॥ निय लो से मी चंचला जीवन सुखद समच्छ॥ बसति हृदय घन स्याम के वर सारंग सुअच्छ॥२४५॥ प्रकृताप्रकृतानेक विषय श्लेषोदाहरण०॥ रति वल्लभ कर कुसुम बर रंग स्याम घन चारु॥ विष मैं सर पदुमैं गहे जल चर केतु उदारु॥२४६॥ अप्रस्तुत प्रशंसालक्षण०॥ अप्रस्तुत वरनन विषे प्रस्तुत वर्न्यो जाय॥ अप्रस्तुत परसंस है कहहिं कविन के राय॥२४७॥ उदाहरण०॥ धन्य शेस सिर जगत हित धारत भुवि को भार॥ बुरो बाघ अपराध विनु मृग को करत अहार॥२४८॥ प्रस्तुतांकुर लक्षण०॥ द्योतन प्रस्तुत को जबै प्रस्तुत ही सौं होइ॥ प्रस्तुत अंकुर आभरन ताहि कहहिं सब कोइ॥२४९॥ उदाहरण०॥ तूं गज तजि मंदाकिनी सरिता छुद्र अन्हात॥ कहा अली तजि मालती सालमली ढिग जात॥२५०॥ पर्य्यायोक्ति लक्षण०॥ कहिय बात रचनान करि पर्यायोक्ति बखानि॥ मिसु करि कारिज साधिये यही अलंकृत जानि॥२५१॥ प्रथम उदाहरण०॥ जाको मन सब जगत मनि जग प्रमाण इक स्वांस॥ तिनके सबके चरण कौं बंदत गिरि धर दास॥२५२॥ द्वितीय पर्य्यायोक्ति उदाहरण०॥ सुंदर स्यामा स्याम दोउ घरि कर होइत आज॥ तब लौं आवति होइ मैं वा बन करि कछु काज॥२५३॥ व्याजस्तुति ल०॥ व्याज स्तुति निंदा मिसै स्तुति जहं वर्नी जाइ।

निंदा मिस स्तुति मिसौ स्तुति बरनहिं कविराय ॥२५४॥ निंदा व्याज स्तुति कौ उदाहरण ॥ भक्त [illegible] घन श्याम सु तुम सौं कहैं न कौन ॥ पावन सबकैं [illegible] तौनहूं तांके कहुं गौन ॥२५५॥ स्तुति व्याज निंदा कौ उदाहरण ॥ [illegible] तुम [illegible] किनी कौन विचार [illegible] पिन कौ निज बंधु कौ मान करावत भंग ॥२५६॥ व्याज स्तुति व्याज स्तुति कौ उदाहरण ॥ एकबार नामहि लिये [illegible] टि अघनाश ॥ धन्य संत जागर करत ऐसे [illegible] ॥२५७॥ व्याज निंदा लक्षण ॥ जहां निंदा के व्याज करि निंदा ही दरसाय ॥ ताहि व्याज निंदा कहैं [illegible] कविराय ॥२५८॥ उदाहरण ॥ नाक हार नारी विषें रहत सदा लय लीन ॥ गरकपाय महं तोहिं धिक बाणी बुद्धि विहीन ॥२५९॥ आक्षेप लक्षण ॥ तीन भांति आक्षेप हैं कवि बरनहिं सविवेक ॥ कहीं बात कों समुझि कहु करै निषेध सु एक ॥२६०॥ जहां निषेधाभास तहं है आक्षेप द्वितीय ॥ छिप्यो निषेध रहै जहां आज्ञा प्रगट तृतीय ॥२६१॥ प्रथमाक्षेप उदाहरण ॥ हरि दीजे बैकुंठ कै बृन्दावन को बास ॥ सबै भौम भूपति करौ अथवा अपनो दास ॥२६२॥ द्वितीय आक्षेप उदाहरण ॥ मैं कहि हौं नहिं भूमि पति [illegible] से तुम जग माहिं ॥ नहिं मैं दूती [illegible] केतु प्रबीन [illegible] लखाहिं ॥२६३॥ तृतीय आक्षेप उदाहरण ॥ जाहु जाहु परदेश पिय मोहि न कछु दुख भीर ॥ प्रान [illegible] जाहिंगो रहि है इतै शरीर ॥२६४॥ विरोधाभास लक्षण ॥

भासै जहां विरोध सो ऽहै विरोधाभास ॥ भूषन इमि वरनन करहिं कविजन गिरिधरदास ॥ २६५ ॥ उदाहरण० ॥ मोहन है तोहि मोह अति याकी उर के माहिं ॥ चार वसु नृप दृग दोऊ पंकज से दरसाहिं ॥ २६६ ॥ विभावना लक्षण ॥ षट विधि होति विभावना बिन कारन के काज ॥ द्वितीय अपूरन हेतु तें पूरन कारज साज ॥ २६७ ॥ प्रति बंधक के अछत हू कारज होइ तृतीय ॥ कार्ज अकारन तें जहां सो चतुर्थ कथनीय ॥ २६८ ॥ उपजै हेतु विरुद्ध तें कारज पंचम सोइ ॥ कारन जन्में काजतें छठी विभावन होइ ॥ २६९ ॥ प्रथम वि० उ० ॥ बिन मादक हरि नैन तुव घूमत अरुन लखाय ॥ बिन मेंहदी करतल अरुन बिन जावक के पाय ॥ २७० ॥ द्वितीय वि० उदाहरण० ॥ एक चक्र रथ बैठि रवि फिरत कोटि लख कोस ॥ कसल अध कर पग अरुन सारथिपनो अदोस ॥ २७१ ॥ तृतीय वि० उदाहरण० ॥ श्याम हृदय सुमित्र तऊ अति उज्जल मन होइ ॥ जीव हरत पर नृप तऊ स्वर्ग लहत अघ खोइ ॥ २७२ ॥ चतुर्थ वि० उदाहरण विद्रुम मैं तें हैं कढी कुंदकली समुदाय ॥ दिवस प्रकासित देखियत नखत सहित द्विजराय ॥ २७३ ॥ पंचम वि० उदाहरण० ॥ सीतल मंद सुगंध जुत ताप बढावत पौन ॥ फूल्यो लखि उडपति उदय अंबुज आनंद भौन ॥ २७४ ॥ षष्ठी वि० उदाहरण० ॥ पंकज तें निकली नदी सोहत ॥ गिरिधरदास ॥ कल्प वृक्ष तें रतन निधि निकस्यो सहित हुलास ॥ २७५ ॥ विशेषोक्ति० ॥ पुष्कल कारन सें

कारज उपजै नाहिं॥ विशेषोक्ति तेहि कहत हैं कविजन जग के मांहि॥१७६॥ उदाहरण०॥ हृदय श्याम धन जनित रस करन सबहि छल बास॥ तऊ तहां को ताप नहि नेकहु होत हिरास॥१७७॥ असंभव लक्षण०॥ कार्य सिद्ध की बर्नियै असंभाव्यता यत्र॥ अलंकार उर आनियै सुकवि असंभव तत्र॥१७८॥ लंक जारि है मारि है को दिन भर दल भौन॥ इक बन चर बन नासिहै रह्यो जानतो कौन॥१७९॥ असंगति लक्षण०॥ कारन हेतु इन दुहुन की असंभाव्यता यत्र॥ अति विरुद्ध जानो परै प्रथम असंगति तत्र॥१८ उदाहरण०॥ सिंधु जनित गरहर पियो मरे असुर समुदाय॥ नैन बान नैनन लग्यो भयो करेजे घाय॥१८१॥ द्वितीय असंगति लक्षण०॥ और ठौर के काज कों और ठौर करि देइ॥ द्वितिय असंगति समुझिये सुकवि समूह निसेह॥१८२॥ उदाहरण०॥ शीश महावर ओंठ पैं अंजन रंजन रूप॥ आजु भोर आये अहो चार बने व्रजभूप॥१८३॥ तृतीय असंगति ल०॥ और कार्य आरंभिये और कीजिये यत्र॥ तीन असंगति मैं अहै तृय असंगति तत्र॥१८४॥ उदाहरण०॥ दुख गोपन कों करन हित चले गोप सिर मौर॥ दुख गोपन कौं ना कियो अधिकी कीनो और॥१८५॥ विषम लक्षण०॥ तीनि भांति बरनन करहिं कवि विषमालंकार॥ अन मिलते को संगति जानहुं प्रथम प्रकार॥१८६॥

गीता के पद नहिं पढ़े चारि वेद सह तत्व ॥ वृंदावन लखन हिलाव्यो गऊ लोक सुभ सत्व ॥२०९॥ व्याघात ल० जौन वस्तु तें होइ जो तासु विरोधी जौन ॥ तिही वस्तु सों होइ जब है व्याघात सु तौन ॥२१०॥ उदाहरण० ॥ जासु मिरन सों भक्त जन पावहिं पद निर्वान ॥ ताही सों सनिजगत जन भ्रमत फिरहिं अज्ञान ॥२२१॥ द्वितीय व्याघात लक्षण ॥ काज विरोधी काज ही जहाँ समर्थो जात काज हेतु हीं सों जहां सो दूजो व्याघात ॥२२२॥ उदा० ॥ कर्म करहिं भव बंध हर योगी श्रुति अनुसार ॥ पामर इस करमहिं तजहिं तिहि डर करि निरधार ॥२१३॥ कारन माला लक्षण० ॥ कार्य हेतु जहँ पूर्ब को पर को पलटि जो होइ ॥ ऐसी जहां परंपरा कारन माला सोइ ॥२१४॥ उदाहरण० दल तें बल बल तें बिजय तातें राज हुलास ॥ कृत तें सुत सुत तें सुजस जस तें दिबि महँ बास ॥२१५॥ उलटि यथा धन गुन तें गुन पढ़न तें पढ़िबो गुरु तें होइ ॥ गुरु सुकर्म तें सुभ करम कार्ये उत्तम जोइ ॥२१६॥ एकावली लक्षण० ॥ ग्रहन मुक्ति की रीति सों जहां अर्थ की ओलि अलंकार एकावली ताहि कहहिं कबि मौलि ॥२१७॥ उदाहरण० ॥ पढ़िबे गुनिबे लौं गुनन अभ्यासन लौं जानि ॥ अभ्यासहु निज ज्ञान लौं ज्ञान भक्ति लौं मानि २१८ ॥ माला दीपक लक्षण० ॥ मिलि दीपक एकावली माला दीपक होइ ॥ इमि बरनहिं आभरन यह कबि कोविद सब कोइ ॥२१९॥ उदाहरण० ॥ जग जस तें जस

धरम तें धरम करमनें चाह ॥ करम वेद बचनानि तें भयो
भूमि भरतारु ॥ २२० ॥ सार लक्षण० ॥ सरस एक ते एक
जहं अलंकार तहं सार ॥ कहूं स्तुति कहुं निंदमय कहूं उभय
व्यवहार ॥ २२१ ॥ स्तुतिमय उदाहरण० ॥ पूज्य नरन तें अमर
ऋषि तिन तें हरि भगवान ॥ पूज्य हरिहु तें हरि भगत
जन उन को ध्यान ॥ २२२ ॥ निंद्यमय उदाहरण ॥ सब
तें लघु असमसकतें रजकन पुनि परमानु ॥ परमानहुं
तें गुनिरहित जानत जिनहिं जहानु ॥ २२३ ॥ उभय मय
उदाहरण० ॥ बली त्रिदश पुनि दसवदन तातें बालि
स गर्व ॥ बली बालि तें लोभ है हर्यो अनुज धन सर्व ॥
२२४ ॥ यथा संख्य लक्षण० ॥ क्रम तें उक्त पदार्थ को कथैं
अन्वय यत्र ॥ कवि भूषण भूषण कहै यथा संख्य वत्र
॥ २२५ ॥ उदाहरण ॥ सुरकों अरिकों मित्र कों भृत्य
रंक कों भूप ॥ पूजहु मारहु आदरहु रखहु देहु अनूप ॥
२२६ ॥ पर्याय लक्षण० ॥ क्रमहीं सों जहं एक कों होय अनेक
अधार ॥ कै अनेक को एकही द्वै पर्याय प्रकार ॥ २२७
प्रथम पर्याय उदाहरण ॥ हुती देह मैं लरिकई बहुरि तरुणाई
जोर ॥ बिरुधाई आई अबौ भजत न नंद किशोर ॥
२२८ ॥ द्वितीय पर्याय उदाहरण० ॥ मेराई मन मोहित
जिहि तिन किये निवास ॥ ताहू कों तजि कौ बसो अबसो
तिन के पास ॥ २२९ ॥ परिवृत्ति ल० ॥ थोरेई दीने जहां
बहुत पदारथ लेत ॥ अलंकार परिवृत्ति तेहि बरनहि
सुबुद्धि निकेत ॥ २३० ॥ उदाहरण० ॥ विंध्याचल मैं गंग ।

بھارتی بھوشن ۲۲

जल अर्क सुमन लै सेत ॥ दैकै देव कपर्दि कहँ जात कुबेर लेत ॥२३१॥ परिसंख्या लक्षण० ॥ जहाँ एक ही वस्तु को है निषेध इक ठाम ॥ दूजे थल थापन तहाँ परिसंख्या यह नाम ॥२३२॥ उदाहरण ॥ बाल मान नेह न नहीं है छूटे पितु धाम ॥ नाहिं ब्रज में घन श्याम हैं मन में लसैं ललाम ॥२३३॥ विकल्प लक्षण० ॥ एक विरोधी एक को तिन में कहिबे अद्य ॥ कै यह कै वह होइगो सो विकल्प अनवद्य ॥२३४॥ उदाहरण० ॥ बल जू अघन बाध हैं हलकै तेरो शीश ॥ यमपुर कै पुर धापिहैं तोहि अबहिं अवनीश ॥२३५॥ समुच्चय लक्षण० ॥ एक साथ ही भाव बहु कछु कारण तें पच ॥ अलंकार उर आनियै सुकवि समुच्चय तच ॥२३६॥ उदाहरण० ॥ फेरति दृग हेरति हरिहि टेरति नाम सुनाय ॥ फिर तिथि रति लसकति झुकति झकति झरोखे आय ॥२३७॥ द्वितीय समुच्चय ल० ॥ एक एक ही हेतु तें जो कारज सिधि होय ॥ तेहि काजहि सब मिलि करैं द्वितीय समुच्चय सोय ॥२३८॥ गंगा गीता गुरु गऊ गोकुल औ गिरि राज ॥ ए सब मिलि कै देत हैं सत गति दिव्य दराज ॥२३९॥ कारक दीपक लक्षण ॥ क्रम गति क्रिया अनेक को कर्त्ता एकहि होइ ॥ कविता उपकारक अहै कारक दीपक सोइ ॥२४०॥ उदाहरण ॥ आवत पुनि अन मिल लखत ॥ लखि हिय सहरषात ॥ वेणु बजावत नाम लै तो हित गोकुल जात ॥२४१॥ समाधि लक्षण ॥ अपर हेतु तें कार्य

63H6

जहाँ सुगम भाग्यबस होइ॥ सो समाधि गतव्याधि बखा-
नत कवि सब कोइ॥२५२॥ उदाहरण॥ चलत कंत कहँ का-
मिनी रोकन चहत प्रबीन॥ भाग जोर गो हार मग आयो
घन जल हीन॥२५३॥ प्रत्यनीक लक्षण॥ सबलि अजीत नि-
ज शत्रु कहँ ता पच्छी कहँ जब॥ कौ पराक्रम सत्य निज
प्रत्यनीक है तब॥२५४॥ उदाहरण॥ हरि मार त्रिपुरारि
सों महा कोप बिचारि॥ तदनु कारि मुनि बान को उर
बेधत सर मारि॥२५५॥ काव्यार्थापत्ति लक्षण॥ कौ काज
गुरु तिहि कहा लघु मैं बात लगति॥ होइ उक्ति ऐसी जहाँ
है काव्यार्थ अपत्ति॥२५६॥ उदाहरण॥ शोक भरी मंदोदरी
बोली करि सुविचार॥ बल साली बाली बध्यो तोहि मार-
न को बार॥२५७॥ काव्यलिंग लक्षण॥ उक्त अर्थ को पुष्ट
नहिं बिना समर्थन होइ॥ ताहि समर्थिय युक्ति सों काव्य
लिंग है सोइ॥२५८॥ उदाहरण॥ अब भव पारावार के
पार जात नहिं बार॥ हैं सहाय रघुराज जू नौका रचनहा-
र॥२५९॥ अर्थान्तरन्यास लक्षण॥ जहाँ विशेष सामा-
न्य तें होय समर्थित खास॥ कै सामान्य विशेष तें सो अ-
र्थान्तर न्यास॥२५०॥ प्र० उ०॥ हरि प्रताप गोकुल बच्यो
का नहिं करहिं महान॥ हूहिन कासिपुरा बाण बच्यो यमसु-
ख को न समान॥२५१॥ द्वितीय उदाहरण॥ बर तांबूल
प्रसंग तें धन जात न पहाय॥ तैसेइ रतन प्रसंग तें बसन
खंडता साथ॥२५२॥ विकस्वर लक्षण॥ जहँ विशेष सा-
मान्य पुनि पुनि विशेष बसि यत्र॥ इक इक कौं हव ।

कै महि लै कैहिं विकलप तव ॥२५३॥ विकस्वर भेद० ॥
भेद विकस्वर मैं जुगल बरनत सुकबि दुहूंन ॥ जो विशेष
सामान्य सुनौ बहुरि उपमान कहूंन ॥२५४॥ प्रथम विकस्वर
उदाहरण ॥ तुम देहो मत देतहैं जिमि सुरतरु मन
मानु ॥ सुनि तुम भ्रम डर तम हर्‍यो सुजन रीति जिमि भानु
॥२५५॥ द्वितीय वि० उ० ॥ दुर्योधन नहिं मानिहै खल
की औषधि हैन ॥ नींबहि गुड़ सों सींचिये होति मधुरता
यैन ॥२५६॥ प्रौढोक्ति लक्षण ॥ कारज गत उतकर्ष
को जोन हेतु तेहि हेतु ॥ कारन निय प्रौढोक्ति कबि मान
तासु कहि देतु ॥२५७॥ उदाहरण ॥ जमुना नीर नहात
नित मन मोहन तन स्याम ॥ तो ओज परसे कठिन
ताको उर है बाम ॥२५८॥ संभावना लक्षण ॥ जो यह
होइ तौ होइ यह ऐसी उक्ति सुयत्र ॥ अलंकार संभावना
बरनहिं कबिजन तत्र ॥२५९॥ उदाहरण ॥ जौ ब्रजराज
होते सुनौ लगते लालन पाय ॥ जौ खग होते तौ तुरत
जाते जहं ब्रजराय ॥२६०॥ मिथ्याध्यवसिति लक्षण ॥
कथित झुठाई ताहि अति दृढ़ करिवेकों यत्र ॥ अपर
झुठाई कल्पिये मिथ्याध्यवसिति तत्र ॥२६१॥
उदाहरण ॥ बहति बारि परघर बिरचि शुचि शीतल
करि आग ॥ हे तरुणी बस तरुण तन करहु विषय रस
त्याग ॥२६२॥ ललित लक्षण ॥ प्रस्तुत गत वृतांत जो
वर्णनीय लखि तौन ॥ अप्रस्तुल प्रति विंबपल कहियत ललित
मति भौन ॥२६३॥ उदाहरण० ॥ अबय पछिताये

होत का चुग्यौ चिरैयन खेत ॥ चाहति उतरन पार तूं बिन
नाव बिन सेतु ॥ २६४ ॥ प्रहर्षन लक्षण ॥ तीन प्रहर्षन में
अहै प्रथम प्रहर्षन सोइ ॥ जतन बिनाहीं लाभ जहं वां
छित फल को होइ ॥ २६५ ॥ उदाहरण ॥ जाको मिलि
बो चहत है महत मनोहर श्याम ॥ सो चलि आई आपु
ही पूछत तुम्हरो नाम ॥ २६६ ॥ द्वितीय प्रहर्षण लक्षण ॥
वांछित फलतें अधिक फल बिनहीं श्रम जहं होइ ॥
कबि रस वर्षण कहत हैं द्वितीय प्रहर्षण सोइ ॥ २६७ ॥
उदाहरण ॥ चह्यो सुदामा अल्प धन दियो भूरि भग-
वान ॥ तिय हिय पिय दरशन चह्यो आय दियो रतिदा-
न ॥ २६८ ॥ तृतीय प्रहर्षण लक्षण ॥ तृतीय प्रहर्षन त-
हें जहां फल साधक जु उपाय ॥ ताही को साधन करत
फल आपुहि मिलि जाय ॥ २६९ ॥ उदाहरण ॥ पियपा-
ती सुधि लेन कों निकरी नारि बजार ॥ उनतें आवति
मिलि गये गिरिधर लाल उदार ॥ २६९ ॥ विषादन ल॰
जो विरुद्ध चित चाहतें सोई कारज होइ ॥ ताहि विषा-
दन कहत हैं अलंकार सब कोइ ॥ २७० ॥ उदाहरण ॥
हरि सों रति इच्छा करी अतिहि चाह सों बाल ॥ सुन्यो
जात मथुरा नगर लै अक्रूर गोपाल ॥ २७१ ॥ उल्लास ल॰
जहं इकके गुन दोसतें होइ और को तौन ॥ उल्लासा-
लंकार तेहि बरनहिं कवि मतिभौन ॥ २७२ ॥ कहूं गुन-
तें गुन दोसतें दोस गुनहुं ते दोस ॥ दोसहु तें गुन होत
इमि बरनत कवि मति कोस ॥ २७३ ॥ गुनतें गुन यथा ॥

بھاکھا بھوشن ۲۸

स्याम ॥ २९५ ॥ अनुगुन लक्षण ॥ निज गुन सो सरसात जो तैसो लहै सहाय ॥ तातें अरु अधिकाय सो अनुगुन नाम कहाय ॥ २९६ ॥ उदाहरण ॥ कुरकी को पुट दै किये निंब पत्र रस क्वाथ ॥ ता कटुता नहिं कहि सकै जे पटु पंडित नाथ ॥ २९७ ॥ मिलित लक्षण ॥ समता तें इक बस्तु में अपर बस्तु छपि जाय ॥ कछु न भेद जान्यो परै मीलित तहां लखाय ॥ २९८ ॥ उदाह० ॥ पान पीक अधरान में सखी लखी नाहिं जाय ॥ काजर की अखियांन में कजरारी न लखाय ॥ २९९ ॥ सामान्य ल० ॥ बहुत बस्तु सम होय जहँ नहिं बिशेष लखि जाय ॥ जानि परै सब एक से तहं सामान्य कहाय ॥ ३०० ॥ उदा० ॥ खरी दीपमाला बिषै बाला सति अभिराम ॥ को तिय को दीपक सिखा मनहिं विचारत स्याम ॥ ३०१ ॥ उन्मीलित ल० ॥ समता तें इक में अपर बस्तु जाय छिपि जत्र ॥ तदपि भेद कछु लखि परै उन्मीलित है तत्र ॥ ३०२ ॥ उदा० ॥ हरित माल के कुंज में नहिं लखाहिं छबि खानि ॥ पीतांबर सौं सत हिय तिय पिय कौं पहिचानि ॥ ३०३ ॥ बिशेष ल० ॥ समता संजुत बस्तु में कछु बिशेष दरसाय ॥ जातें जान्यो जाय वह तिहि बिशेष ठहराय ॥ ३०४ ॥ उदा० ॥ सेत हंस बक सम हैं कैसे पैं लखाय ॥ पय पानी आगे धरै भेद सकल खुलि जाय ॥ ३०५ ॥ उत्तर ल० ॥ अभिप्राय संजुत जहां गूढ उत्तर दान ॥ अलंकार उत्तर तहां बरनत बुद्धि निधान ॥ ३०६ ॥ उदा० ॥ वतन कहां कैसे पथिक कहै सुनो मम धाम ॥ पै हो वा आराम में सब बिधि को आराम ॥ ३०७ ॥ चित्र लक्षण ॥ वही प्रश्न उत्तर कहै कै हैं कहियत कौ निरधार ॥ अरु इक उत्तर प्रश्न बहु सो द्विबिधालंकार ॥

३०८ एकप्रश्नोत्तर कौ उदाहरण ॥ कोकिल सुंदर नादकर कामहिं बल सुविशाल ॥ केकी बहुता बजा चिषैं कोसमंत महिपाल ॥ ३०९ ॥ अनेकप्रश्नै कोत्तर ॥ कौन चलै केदार मैं काको थल केदार ॥ कोहै रे बक औषधी हर उत्तर विधार ॥ ३१० ॥ सूक्ष्मलक्षण ॥ पर आशय लखिवे को चेष्टाभिप्राय ॥ उत्तर रूप अनूप जहँ तहँ सूक्षम कवि गाय ॥ ३११ ॥ उदाहरण ॥ लखन लख्यो रघुनाथ दिशि निसिचर आहन काम ॥ तर्जनि पैं धरि तर्जनी ऐंचि लई तब राम ॥ ३१२ ॥ पिहितलक्षण ॥ ॐ ॥ ० ॥ कोऊ पर तन्नाल लखि नाहिं प्रकाशै यत्र ॥ चेष्टाभिप्राय करि पिहित लंकार मिलत्र ॥ ३१३ ॥ उदाहरण ॥ भाल लाल आये निरखि जावक लाग्यो भाल ॥ आतुर चातुरता भरी दई आरसी बाल ॥ ३१४ ॥ व्याजोक्तिलक्षण ॥ जहँ गोपन आकार को कै बात कहि अन्य ॥ तहँ व्याजोक्ति बखानहीं जै कवि धरनी धन्य ॥ ३१५ ॥ उदाहरण ॥ आरज न मानी नेकहू बरज्यो री बहुबार ॥ बावन बहुत गुलाब तरु कौंन लगे तनदार ॥ ३१६ ॥ गूढोक्तिलक्षण ॥ जहँ कोऊ कहि और सों औरहि देइ सुनाय ॥ जातें लखहिं न निकट जन तहँ गूढोक्ति कहाय ॥ ३१७ ॥ उदाहरण ॥ गूढोक्ति के दोय भाँति दरसाहिं ॥ बहु श्लेष युत देखियै कहुं श्लेष युत नाहिं ॥ ३१८ ॥ श्लेषयुक्त को उदाहरण ॥ जाहु परोसी या समय या दिन आवति बात ॥ आए पाहन अग्र चित सुरति कारी गात ॥ ३१९ ॥ अश्लेषरहितकोउदा

या छन संगन जायहौं भीर होति नर मांझ॥ ताते जाय नहायहौं सखी अकेली सांझ॥२२०॥ विवृतोक्ति लक्षण॥ गुप्त अर्थ जहं आपुही कवि सूचित करि देत॥ अलंकार विवृतोक्ति तेहि बरनत बुद्धि निकेत॥२२१॥ लक्ष्य माहिं विवृतोक्ति के गुप्त अर्थ विधि दोय॥ शब्द शक्ति सों होय कहुं अर्थ शक्ति सों होय॥२२२॥ शब्द शक्ति को उदाहरण जौं गोरस चाहत लियो तो आवहु मम धाम॥ यों कहि याचक सों हरिहि किय सूचित रति ठाम॥२२३॥ अर्थ शक्ति को उदाहरण॥ मेरो मन न अघात है सुनि भूठी रस बात॥ हंसि कहि भूठी बाल तब लाल लगाई गात॥२२४ युक्ति लक्षण॥ निज मर्महिं गोपन करै कछु क्रिया करि यत्र॥ गिरिधरदास बखानिए युक्ति अलंकृत तत्र॥ २२५॥ उदाहरण॥ हरि सों रति करि तिय उठी आइ गई तित सास॥ चीर फसाइ करील सों ठाढ़ी लेत उसास॥ २२६॥ लोकोक्ति लक्षण॥ लोक प्रवाद बखानिये वचन दीव जेहि ठौर॥ अलंकार लोकोक्ति तेहि बरनहिं बुध सिरमौर॥२२७॥ उदाहरण॥ कहा न सावन शोक कौं सूखो ज्ञान बताय॥ ऊधो आप सुनी कहूं प्यास ओस तें जाय॥२२८॥ छेकोक्ति लक्षण॥ अपर अर्थ व्यंजक जहां सोइ लोकोक्ति लखाय॥ वचनन की रचनान तें तहं छेकोक्ति कहाय॥२२९॥ उदाहरण॥ दूती पद बूती कहा कीनो नहि पति वंध॥ दोनो बनि आयो भलो सोनो और सुगंध॥२३०॥ वक्रोक्ति लक्षण॥ सुनत।

वाको रोपादिवस रचै अर्थ जहं और ॥ कहूं स्लेषहुं काकुसौं वक्रउक्ति तिहि ठौर ॥ ३३१॥ स्लेष वक्रोक्ति उदाहरण ॥ मान तजो गहि सुमति वर पुनि पुनि होत न देह ॥ मान तजो गिरि येग को नहिं हम करत सनेह ॥ ३३२॥ काकु वक्रोक्ति यथा ॥ तोहि त्यागि श्यामहि सखी अब त्रिय नाहि सुहाय ॥ अब तिय नाहि सोहाय सुनि बोली नैन चढाय ॥ ३३३॥ स्वभावोक्ति लक्षण ॥ शिशुत्वादि जो जाति है तद्गत जौन सुभाय ॥ ताको बरनन करत तहं स्वभावोक्ति कविराय ॥ ३३४॥ उदाहरण ॥ धूधूरे धरनि मैं धरत अटपटे पाय ॥ लाल लटपटे आखरनि भाषत सखि हरषाय ॥ ३३५॥ भाविक लक्षण ॥ भूत भविष्य पदार्थ को जहं सकल कविराय ॥ बरनत करि प्रत्यक्ष तहं भाविक भाष्यो जाय ॥ ३३६॥ भूत प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ बेनु बजावत मधुर सुर कोटि लजावत मैनु ॥ ऊधो आवत अजहुं हरि सांझ चरावत धेनु ॥ ३३७॥ भविष्य प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ श्याम सिंह नृपपट्ट पै श्याम सिंह सम विप्र ॥ मैं देखति कर पकरि मोहि जात मुख धरि क्षिप्र ॥ ३३८॥ उदात्त लक्षण ॥ ॥ श्लाघनीय जो चरित सो अंग और को होइ ॥ अति संपति बरनि बो है उदात्त विधि दोय ॥ ३३९॥ प्रथम उदात्त उदाहरण ॥ मुनिजन आवहिं जासु पद दरसन पावहिं रंच ॥ ते कुबजा के भवन मैं राजत बैठे मंच ॥ ३४०॥ द्वितीय उदात्त उदाहरण ॥ तो घर नैं

डारहिं जनी घरी मनी नहु हारी ॥ तिन तैं भे नग नग घने
लखहु मेरु अनुहारि ॥३५१॥ अत्युक्ति लक्षण ॥ जहँ उदारता सूरता विरहादिक की उक्ति ॥ अतुल मिथ्या
होय तहँ अलंकार अत्युक्ति ॥३५२॥ उदारता यथा ॥
भूपति तेरे दान सों घर घर भयो सुमेर ॥ भटकहिं देत
प्रदछिना सतलहैं बहु फेर ॥३५३॥ सूरता यथा ॥ तो
प्रताप डर मान निज शत्रु गये यम लोक ॥ दुलहु नमारे आइ यह लखु हरषहु शोक ॥३५४॥ विरह यथा ॥
जा वन विरहिनि जाति है लगति स्वास शिखि ज्वाल ।
ता वन के सारी गिरैं रवी है तत्काल ॥३५५॥ निरुक्ति लक्षण ॥ जहँ योग वस नाम को कल्पित औरै
अर्थ ॥ तहँ निरुक्ति भूषन कहैं कवि कुल तिलक समर्थ ॥३५६॥ उदाहरण ॥ जौं परकीया त्यागि के चले विदेश सचैन ॥ तौ विषई तुम सांच हौ अबला
मानहि लैन ॥३५७॥ प्रतिषेध लक्षण ॥ जहां प्रसिद्ध निषेध को प्रगु कीन्न दरसाय ॥ प्रतिषेधालंकृति कहहिं तिहि अलि मति कविराय ॥३५८॥ उदाह०
नहि विराट को पाकघर जहँ करछी व्यवहार ॥ यह
संगर जामैं चलैं बरछी वारंवार ॥३५९॥ विधि ल० ॥
सिद्ध वस्तु ही को जहां कोऊ करै विधान ॥ विधि भूषन तहँ जानिये इहि विधि कहहिं सुजान ॥३६०॥
उदाहरण ॥ क्रम सों पहुंचत अरक जब स कमकरक नगीच ॥ जीवन प्रद शशि होत तब जीवन प्रद-

(जगवीच)

जगबीच ॥ ३५१ ॥ हेतुलक्षण ॥ जहां काज के साथही कारन बरन्यो होइ ॥ कै दोउन की एकता होन हेतु विधि दोइ ॥ ३५२ ॥ प्रथम हेतु उदाहरण ॥ गरजि उदै घन मानिनी मान मिटावन काज ॥ धनुटंकार्यो भूप नै शत्रु नसावन आज ॥ ३५३ ॥ द्वितीय हेतु उदाहरण० ॥ मोहि परम पद मुक्ति सवतो पद रज घन श्याम ॥ तीनि लोक को जीतिबो मोहि वसिवो ब्रज गाम ॥ ३५४ ॥ इत्यर्थालंकार समाप्तः ॥ अथ शब्दालंकार ॥ इमि अर्थालंकार मत वरनि बुद्धि अनुसार ॥ वरनत गिरिधरदास कवि अब शब्दालंकार ॥ ३५५ ॥ अनुप्रास लक्षण ॥ स्वर विन व्यंजन वरन की जहं समता दरसाइ ॥ स्वर संयुक्त हु कहंहि तेहि अनुप्रास कवि राइ ॥ ३५६ ॥ उदाहरण० ॥ मन मोहन सोहन भले लसत रसीले नैन ॥ ठाढ़े गुन गाढ़े अहैं कहत छबीले नैन ॥ ३५७ ॥ अथ छेकानुप्रास लक्षण० ॥ समता बहु व्यंजनन की क्रम सों जहं इक बार ॥ तहं छेकानुप्रास है सुनिये सुकवि उदार ॥ ३५८ ॥ उदाहरण० ॥ शुभ सोभा सोहै सही बारी बर बल बाल ॥ सोना सीनो रस रसी बनी बनै बलि बाल ॥ ३५९ ॥ वृत्त्यनुप्रास लक्षण० ॥ समता बहु व्यंजनन की जहं बिनु क्रम इक बार ॥ कै क्रमसें बहु बार तहं वृत्ति अलंकृति चारु ॥ ३६० ॥ एकहु व्यंजन की जहां समता करति निवास ॥ एक बार बहु बार करि तहां वृत्त्यनुप्रास ॥ ३६१ ॥ एक बार बहु व्यंजन सम-

ता यथा ॥ लसै शैल पर रूप धरन बचन हरि रस साथ ॥ लसै सुखमय चारु रुचि धरे राधिका हाथ ॥ ३६२ ॥ क्रम सों बहु बार व्यंजन समता यथा ॥ बैन बने बनिता मुखद ब्रज विधु बुध बुधि ऐन ॥ नौल नील नल नालहरि कोकिल कल किल बैन ॥ ३६३ ॥ एक व्यंजन की एक बार समता यथा ॥ ठाढ़े गाढ़े गुन बने सखि देखो हम श्याम ॥ प्रीति मंत मोहैं महा निसि बसि श्यामा धाम ॥ ३६४ ॥ एक व्यंजन की बहु बार समता यथा ॥ घेरि जोर करि घेर गुरु जुरे वारि भरि धार ॥ फिरि फिरि डारैं वारि गिरिवर पर चारों ओर ॥ ३६५ ॥ श्रुत्यनुप्रास लक्षण ॥ तालु आदि कथान हत व्यंजन को उच्चार ॥ जहां सादृश अनुप्रास श्रुति बरनिय करि निरधार ३६६ चतुर जानकी चारु छवि चंचल एकहु मत च्छ ॥ भकति चंद मुख लखन हूं छुन जाइ झरोखे स्वच्छ ॥ ३६७ अंत्यानुप्रास लक्षण॰ ॥ आदि स्वर संयुत जहां व्यंजन आवृत होइ ॥ सो अंत्यानुप्रास है कहियतु कांतहि जोइ ॥ ३६८ ॥ उदाहरण॰ ॥ नीर धीर पर पीर हर संग अहीर की भीर ॥ नीर तीर जहं कीर बहु लसे सीर धीर बीर ॥ ३६९ ॥ लाटानुप्रास लक्षण॰ ॥ शब्द अर्थ हू न दुहुन की जहं पुनरुक्ति प्रकास ॥ तात्पर्ज महं भेद कछु नहं लाटानुप्रास ॥ ३७० ॥ उदाहरण॰ ॥ राजिव मुख राजिव नयन लखो नयन की कोर ॥ करि करुना करुना करन मुख चोरो दुख चोर ॥ ३७१ ॥ यमक

लक्षण॰॥स्वर व्यंजन गन की जहाँ आवृत्ति सुकवि बरिबरड॥यमक सोई है दोय विधि इक अखंड इक खंड॥३७२॥सो अखंड सार्थक सबै शब्द जमक को होय॥खंड शब्द सार्थक कोऊ कोऊ निरर्थक सोय॥३७३॥अखंड यमक उदाहरण॰॥भूप कमल कुंडल करन करन शत्रु मद नास॥आदि बरन वर बरन बित उज्जल बरन प्रकास॥३७४॥खंड उदाहरण॰॥जन बधरन अंबुज धरन बर अधरन छबि खानि॥सरन सुखद अरि सरन जित रसरन बित मुद दानि॥३७५॥शब्दअर्थ॰॥आभरन दोऊ इहि विधि भये समाप्त॥इनको पढ़ि गुनि गुनिन कों ह्वैहै अति सुखप्राप्त॥३७६॥कवि भारति भूषन परम भारति भूषन एहु॥भारति चरन सनेह धरि सत कवि इहि पढ़ि लेहु॥३७७॥विधि विधि गुनि शिव शिवहि गुनि करत चरन रज आस॥बार बार तिनके चरन बंदत गिरिधरदास॥३७८॥इति श्री नंदनंदन पदारविंदमलिंद धनाधीश श्री बाबू गिरिधरदास कवीश्वर विरचितं भारतीभूषणमलंकारं समाप्तम्॥

इति

SPS
891.2 G 87 B
6346

नामकिताब

इन्द्रसभा
विक्रमविलास
बैताल पच्चीसी
सिंहासन बत्तीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
बकावली सुमन
चहार दरवेश
क़िस्सा हातम ताई
अपूर्व कथा
क़िस्सा गुल सनोबर
सहस्र रजनी चरित्र
राबिन्सन्क्रोसो का इतिहास

वैद्यक

निघण्ट भाषा
अमरविनोद
वैद्यजीवन
औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
अमृतसागर
वैद्यमनोत्सव

ज्योतिष

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
ज्ञानस्वरोदय
रमलसार
इन्द्रजाल

मुत फ़रक़ात

शनिश्चर की कथा
ज्ञान माला

नामकिताब

गोपीचंद भरतरी
कथा श्रीगंगाजी
अवधयात्रा
भरतरी गीत
बाललीला नागलीला
सुहावली रत्नावली
गोकर्णमहात्म
श्रीगोपालसहस्रनाम
कथासत्यनारायण
हनुमान बाहुक
जनक पच्चीसी
आनन्दामृत वर्षिणी
वनयात्रा
कायस्थवर्णनिरूपण
विहारविंझवन
समरविहारविंझवन
कल्प भाष्य

दरसी

अक्षरावली
स्वयंबोध
ज्ञानचालीसी
दोहावली
बालबोध
विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
किताबजंत्री
गणितकामधेनु

नामकिताब

लीलावती
पटवारियों की पुस्तक ४ भाग

संस्कृत की पुस्तकें

लघुकौमुदी
सिद्धान्तचन्द्रिका
अमरकोष तीनों कांड
पंचमहायज्ञ
निर्णयसिन्धु
संग्रहशिरोमणि
भगवद्गीता सटीक
विष्णुभागवत
भविष्योत्तरपुराण
अपराधभंजनस्तोत्र
दुर्गापाठ सटीक
दुर्गास्तोत्र
कायस्थकुलभास्कर
कायस्थधर्मनिरूपण तथा दोहा
मथुरासभा

ज्योतिष

मुहूर्तगणपति
मुहूर्तचक्रदीपिका
मुहूर्तचिन्तामणिस·
मुहूर्तदीपिका
मुहूर्तमार्त्तण्डस·
बृहज्जातक सटीक
जातकालंकार स·
जातकाभरण
होरामकरन्द

नामकिताब

संस्कृत उर्दू टीका सहित

मनुस्मृति
विष्णु हारीत स्मृति
महिम्नस्तोत्र

संस्कृत भाषाटीका सहित

अमरकोष तीनों कांड
याज्ञवल्क्य स्मृति
सन्ध्यापद्धति
ब्रतार्क
भगवद्गीताटीका
हरिवंश
भगवद्गीताटीका-आनन्दगिरि
गीतगोविन्द
कथासत्यनारायण
परमार्थसार
शार्ङ्गधरसंहिता
पाराशरी
शीघ्रबोध
लघुजातक
षट्पंचाशिका
सामुद्रिक

सरिश्ते तालीम की पुस्तकें संस्कृत

ऋजुपाठ १ भाग
तथा २ तथा ३ भाग
धातुरूप

फ़ारसी

नाम किताब

वर्णमाला १ भाग
तथा २ भाग
तथा कैथी फ़ारसी नागरी हरूफ़ मुक़र्रात
अक्षरारम्भ
वर्णप्रकाशिका १ भाग व २ भाग
सूरजपुर की कहानी
धर्मसिंह का वृत्तान्त
शिक्षावली
शिशुबोध
पत्रहितैषिणी
पत्रदीपिका
विद्याचक्र
विद्यांकुर
पदार्थज्ञानविटप
पदार्थविद्यासार
भोजप्रबंधसार
राजनीति
तथा
भाषालघुव्याकरण १ भाग तथा २ भा०
भाषातत्त्वदीपिका
भाषाचन्द्रोदय
भूगोलतत्त्व
भूगोलदर्पण
इतिहासतिमिरनाशक १ भाग व २ भा० व ३ भाग
अवधदेशीय भूगोल

नाम किताब

मुंतिखलाम का इतिहास
भारतवर्षीय का इतिहास
हितोपत्रिका
बालाभूषण
पद्यसंग्रह
भाषाकाव्यसंग्रह
कवित्तरत्नाकर १ भा० तथा २ भाग
मंगलकोश
अंकप्रकाश
गणितप्रकाश १ भा० तथा २ भा० ३ भा० ४
गणितक्रिया
क्षेत्रचन्द्रिका २ भा०
सकील बाबरा
रेखागणित १ भा० तथा २ भाग
बीजगणित १ भाग तथा २ भाग
रामायण तुलसीकृत बालकाण्ड
अयोध्याकाण्ड
आरण्यकाण्ड
किष्किन्धाकाण्ड
सुन्दरकाण्ड
लंकाकाण्ड
उत्तरकाण्ड
गुटका १ भाग तथा २ भाग ३ भाग
पशुचिकित्सा

नाम किताब

हिदायतनामा मुदर्रिसान्
पट्टा बरबूत कैथी
तथा क़बूलियत
रजिस्टर दाख़िल ख़ारिज तुलबा मदर्सा
रजिस्टर हाज़िरी पाठशाला

क़ानून नागरी

ऐक्ट लगान मग़रबी व शिमाली १० सन् १८५९ ई०
इंडियन पिनल कोड
मजमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०
ऐक्ट स्टाम्प १० सन् १८६२ ई०
ऐक्ट रजिस्टरी २० सन् १८६६ ई०
ऐक्ट स्टाम्प अदालत ७ सन् १८७० ई०
मजमूआ ऐक्ट अवध लगान १९ सन् १८६८ ई० पुरवारी २६ सन् १८६६ ई० वग़ैरा
ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात १८ सन् १८५९ ई०

नाम किताब

ऐक्ट तअल्लुक़ेदारान् मक़ामात अवध १४ सन् १८७० ई०
ऐक्ट चौपायों की मदाख़िलत बेजा का १ सन् १८७१ ई०
मजमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी १० सन् १८७२ ई०
ऐक्ट माल गुज़ारी मग़रबी व शिमाली १९ सन् १८७३ ई०
तरमीम मजमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी ११ सन् १८७४ ई०
तक़ावी के क़ायदे
सरक्यूलर गवर्नमेंट नम्बर ८० (कलिक.) सन् १८७७ ई०
सवाल जवाब पुलिस
अवध रुहेलखंड रेलवे का दस्तूरुल् अमल

कैथी

पटवारियों के क़ायदे उर्दू कैथी मजमूनी
ऐक्सके लाइसेन्स का ऐक्ट २ सन् १८७८ ई० पंजाब मग़रबी व शिमाली अवधकृति